अपेक्षा नहीं रहती। नित्य-निरन्तर मनोयोग सहित भगवद्गीता के श्रवण में ही तत्पर रहे। वर्तमान काल में मनुष्य समाज इतना अधिक विषयपरायण हो चुका है कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य का स्वाध्याय सम्भव नहीं रहा है। कल्याण के लिए यह एक ग्रन्थ—भगवद्गीता सर्वथा पर्याप्त है, क्योंकि यह वैदिक शास्त्रों का परम सार है और स्वयं श्रीभगवान् ने इसका गायन किया है। कहा जाता है कि गंगाजल का पान करने वाला अवश्य मुक्त हो जाता है। फिर श्रवणपुटों से भगवद्गीता का पान करने वाले का तो कहना ही क्या? गीता तो वस्तुतः महाभारत का सारामृत है। स्वयं विष्णु ने इसका प्रवचन किया है, क्योंकि श्रीकृष्ण ही आदिविष्णु हैं। गीता रूपी सुधा-धारा श्रीभगवान् के मुखारविन्द से निस्यन्दित है, जबकि गंगा उनके चरणारविन्द से निकली है। अवश्य ही श्रीभगवान् के मुख और चरण में भेद नहीं है, परन्तु यह सत्य तो हमें स्वीकार करना ही होगा कि भगवद्गीता की महिमा गंगा से भी कहीं बढ़कर है।

सब उपनिषद् मानो गौ के समान हैं और श्रीकृष्ण एक ग्वालबाल के तुल्य हैं, जो इस गौ से गीतामृत दोहन कर रहे हैं। यह दुग्ध वेदों का परम सार है और अर्जुन गोवत्स के अनुरूप हैं। विवेकी, महर्षि और शुद्ध भक्त ही इस भगवद्गीता रूपी दुग्धामृत का पान करते हैं।

आज के युग का मानव बड़ा इच्छुक है कि सबके लिए एक ही शास्त्र, एक ही ईश्वर, एक ही धर्म और एक ही व्यवसाय हो। अतः सम्पूर्ण विश्व के लिए एक ही सार्वभौम शास्त्र हो—**श्रीमद्भगवद्गीता**। सबके लिए एक ही आराध्य हों—**श्रीकृष्ण** और एक ही मन्त्र हो—**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।** तथा सम्पूर्ण जगत् के लिए एक ही उद्यम हो—**भगवान् श्रीकृष्ण की सेवा में निरन्तर लीन रहना।**